रियलिटी बाइट्स की लेखिका से पहली मुलाकात

व्यावसायिक दक्षता और इंसानियत के बीच खूबसूरत संतुलन

बहुचर्चित और उपयोगी पुस्तक रियलिटी बाइट्स की लेखिका, मानव संसाधन की विशेषज्ञ और अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओं की सूत्रधार अपर्णा शर्मा से पहली ही मुलाकात बड़ी आत्मीय और खुशनुमा बन पड़ी। उज्जैन का सेंट मेरी कॉन्वेंट स्कूल शिक्षा का एक उत्कृष्ट केन्द्र है, जहाँ के अनेक पूर्व विद्यार्थी आज देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं, उन्हीं में से एक दमकता हुआ नाम है- अपर्णा शर्मा। सन् 1980 के दशक में सेंट मेरी की मेधावी छात्रा रहीं अपर्णा, आज भी उज्जैन में गुजरे स्कूल के उन दिनों को भूलती नहीं हैं। पिछले सप्ताह जब वे उज्जैन आईं तो उस दौर की कई यादों को बातचीत में ताजा करती रहीं। तब उज्जैन के प्रतिष्ठित महिला चिकित्सकों में एक प्रमुख नाम डॉ. मोहिनी व्यास का हुआ करता था। मोहिनीजी, अपर्णा की भुआजी थीं और उनके पास रहकर ही उन्होंने सेंट मेरी में शिक्षा प्राप्त की थी। अपनी भुआजी की प्रेरक स्मृति में अपर्णा द्वारा सेंट मेरी में 'उड़ान' शीर्षक से एक स्कॉलरशिप की शुरुआत की गई है। यह छात्रवृत्ति नौवीं कक्षा पास करने वाले मेधावी विद्यार्थी आलराउन्डर के लिए है। इस वर्ष डॉ. मोहिनी व्यास स्कॉलरशिप के लिए सेंट मेरी की छात्रा राघवी कंवल का चयन किया गया है। राघवी को स्कॉलरशिप देने के लिए ही अपर्णा अपनी हमेशा बनी रहने वाली व्यस्तता में से कुछ समय चुरा कर पिछले सप्ताह उज्जैन आई थीं।

प्रबंधन के क्षेत्र में अनेक नवाचारों का प्रयोग करते हुए देश-विदेश में निरन्तर भ्रमण करने वाली अपर्णा शर्मा शालीन, प्रसन्नचित्त, सहज और सरल व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं। बनावटी फैशन ओढ़ी जाने वाले आधुनिकता से वे दूर ही रहती हैं और पारम्परिक संस्कारों की दृढ़ता के सहते अपनी जड़ों से जुड़ी हुई हैं। जब वे उज्जैन में पढ़ रही थीं, तब सेंट मेरी कॉन्वेंट के अनेक विद्यार्थियों से मेरे खेलपूर्ण रिश्ते रहे। आकाशवाणी, इंदौर के लिए सेंटमेरी के विद्यार्थियों के साथ अंतर्राष्ट्रीय बालवर्ष में अपने स्वरचित नाटक 'नीरज का जन्मदिन' की प्रस्तुति भी की थी। पर उस दौर में अपर्णा शर्मा से कभी मुलाकात का संयोग नहीं बना। तीन दशक से ज्यादा समय गुजरने के बाद अपर्णा शर्मा का नाम पहली बार तब जाना था, जब पिछले साल उन्होंने अपनी किताब 'रियलिटी बाइट्स' का लोकार्पण, सेंट मेरी कॉन्वेंट में ही कराया था। इस किताब के प्रति अपनी सहज उत्सुकता के कारण ही उनसे पहले-पहल फोन पर बात हुई थी। पूर्व परिचय नहीं होने पर भी उन्होंने सहज सौजन्यवश रियलिटी बाइट्स की प्रति मुंबई से भेज दी थी। पुस्तक का पूरा नाम है- रियलिटी बाइट्स द रोल ऑफ एचआर इन टुडे'ज वर्ल्ड। पुस्तक अच्छी लगी थी और उसके बारे में मैंने विस्तार से लिखा भी था। (सा. विक्रान्त भैरव दर्शन, 16 सितम्बर 2016)। कुछ महीनों बाद ही किताब का हिन्दी संस्करण आया, तब उसकी चर्चा भी सा. विक्रांत भैरव दर्शन में की थी। अपर्णा से कभी-कभार फोन पर बात होती रही, जिसने उनसे मिलने की उत्सुकता बढ़ा दी थी। पिछले सप्ताह उज्जैन आईं, वह ईद का मुबारक दिन था और उनसे मुलाकात हुई तो इस पर ईद, ईद मिलन के ही बहुत मीठी हो गई। उन्हें जब पहली बार देखा तो ऐसा लगा जैसे भरी दोपहरी में इंद का चाँद दिख गया हो। वे देव दर्शन कर लौटी थीं और उनका व्यवहार सात्विक आत्मीयता से भरा-पूरा था। कुछ आत्मीय अनौपचारिक अंदाज में ही वे उन्मुक्त भाव से बोलती जा रही थीं। उनकी उत्साह से भरी बातों और खिलखिलाती हंसी ने कुछ ही देर में यह बात भुला दी कि हम पहली बार ही मिल रहे हैं। उनकी बातों का प्रवाह ही ऐसा था कि बीच में टोकने का मन ही नहीं हुआ और पूरी मुलाकात में ज्यादातर वे ही बोलती रहीं और मैं मुग्ध भाव से सुनता रहा।

अपर्णा की बातों में उनकी संघर्षजनित सफलता का सुख छलकता रहा। वे अपनी प्रतिभा और मेहनत के बलबूते पर ही संघर्षपूर्ण सफलता के रास्ते पर आगे बढ़ रही हैं। वे बड़ी विनम्रता से अपने परिजनों, शिक्षकों, मित्रों और सहकर्मियों का स्मरण करती हैं, जिनका सहयोग उन्हें मिलता रहा है और अपनी सफलता के लिए प्रभु का आभार मानती हैं। अपने ही बलबूते पर अपना व्यक्तित्व गढ़ने और गर्वीले कीर्तिमान कायम करने का आत्मविश्वास उनके चेहरे को और भी दीप्त बना रहा था। अपर्णा ने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस, मुंबई से कार्मिक और औद्योगिक संबंध (पीएम और आईआर) में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद कार्पोरेट क्षेत्र में दस्तक दी थी। उन्होंने मोनसेंटो, नोवार्टिस, यूसीबी, डच्श बैंक और लाफार्ज जैसे प्रतिष्ठि प्रतिष्ठानों में मानव संसाधन से जुड़े महत्वपूर्ण दायित्व निभाए हैं। कार्यक्षेत्र की विशेषज्ञता और सफलता के लिए वे अनेक पुरस्कार और सम्मान से नवाजी गई हैं। आईपी हैदराबाद द्वारा उन्हें बैंकिंग, वित्तीय सेवा और बीमा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए वुमन लीडरशिप अवार्ड प्रदान किया गया था। इंडियन सोसायटी फॉर ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट, मुंबई से उन्होंने प्रशिक्षण और विकास के लिए एक्सीलेंस अवार्ड प्राप्त किया है। एचआरडी कांग्रेस 2013 में भी वे वुमन अवार्ड की विजेता रही हैं। प्रतिष्ठित व्यापार प्रबंधक के वार्षिक अंक (जुलाई 2012) में शीर्षस्थ महिला के रूप में नामांकित करते हुए चिंतनशील, वैचारिक अग्रगामी व्यक्ति के रूप में अपर्णा का उल्लेख किया गया था। उनके नेतृत्व में कई कंपनियों को लाफार्ज में डिलीजनं चैंपियनशिप ट्रॉफी, वेल्थ (वुमन एडिंग वेल्थ एंड एक्सीलेंस) जैसे ग्लोबल अवार्ड मिल चुके हैं। लगातार तीन वर्ष तक चीफ लर्निंग ऑफिसर का पुरस्कार प्राप्त कर उन्होंने कीर्तिमान बनाया है।

अपर्णा की सक्रियता और सफलता केवल कॉर्पोरेट दुनिया तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि इससे अलग मानव संसाधन के क्षेत्र में भी वे अनेक वर्षों से महत्वपूर्ण योगदान कर रही हैं। आज वे मानव संसाधन की विशेषज्ञ और नेतृत्वकर्ता के रूप में शीर्ष स्थान पर सक्रिय हैं। आईएसटीडी के साथ मानव संसाधन के प्रशिक्षण और विकास की दिशा में अपर्णा का योगदान बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है। ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन और नेशनल एचआरडी नेटवर्क में भी उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। नेशनल एचआरडी नेटवर्क की मानद कोषाध्यक्ष और एनएचआरडीएन के राष्ट्रीय कार्यकारी मंडल की सदस्य जैसी अनेक जिम्मेदारियों को उन्होंने दक्षतापूर्वक निभाया है।

अपर्णा की बातों से यह जान कर बड़ा सुकून मिला कि कार्पोरेट जगत और मानव संसाधन की सघन सक्रियता के बीच भी उनका रचनात्मक व्यक्तित्व हरा-भरा बना हुआ है। प्रकृति की सोहबत उन्हें खूब अच्छी लगती है और यात्राओं का रोमांच उन्हें उत्साहित करता है। अपर्णा, एक अच्छी शौकिया छाया चित्रकार हैं। किताबों से उन्हें बहुत प्यार है, अनेक अच्छी पुस्तकें उनके निजी संग्रह में मौजूद हैं। व्यस्तता के बीच भी वे प्रतिदिन कुछ न कुछ पढ़ती जरूर हैं। अपर्णा बताती हैं कि सफलता की राह आसान नहीं रही और खास तौर से महिला होने के कारण भी कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ता है पर पक्की लगन, साहस और संघर्ष से आगे बढ़ा जा सकता है। पहली मुलाकात में जाना कि व्यावसायिक दक्षता और इंसानियत के बीच खूबसूरत संतुलन है

-अपर्णा